दअवत व तबलीग़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।
सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर।
व बअद –

हज़रत आदम अलैहि. से मुहम्मद सल्ल. तक जितने भी अम्बिया अलैहि. दुनिया में भेजे गए, सब का एक ही काम था कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की बन्दगी की तरफ दअवत दें। लोगों के सामने आख़िरत (क़यामत) का तसव्वुर पेश करके उसकी फ़िक्र पैदा करे और आख़िरत में कामयाबी हासिल करने का तरीक़ा बताएं। इसीलिए हर नबी की पहली दअवत यही रही कि "लोगों! अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की इबादत करो। जिसने न सिर्फ़ यह कि तुम्हें पैदा किया बल्कि तुमसे पहले हो गुज़रे सब इन्सानों को भी पैदा किया। उम्मीद है कि तुम उस (अल्लाह) से डर कर ज़िन्दगी गुज़ारोगे। (बक़रह आयत 21)

आप सल्ल. के पहले दअवती बोल भी यही थे कि "ऐ लोगों, "ला इलाहा इल्ललाह कह लो आख़िरत में कामयाब हो जाओगे।" अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्ल. पर रिसालत व नबुवत का मन्सब तो ख़त्म कर दिया लेकिन उनका दअवत व तब्लीग़ का काम उम्मते मुस्लिमा के हवाले कर दिया।

उम्मत

उम्मत की दो क़िस्में हैं : 1. उम्मते इजाबत 2. उम्मते दअवत।

जो लोग मुस्लिम घरानों में पैदा होते हैं या इस्लाम कुबूल कर लेते हैं, उन्हें उम्मते इजाबत कहा जाता है ओर जो लोग ग़ैर मुस्लिम परिवारों में पैदा होते हैं, वो उम्मते दअवत कहलाते हैं। लेकिन हैं सब अल्लाह के बन्दे और नबी सल्ल. के उम्मती। उम्मते इजाबत यानि मुसलमानों की यह अहम ज़िम्मेदारी है कि वो ग़ैर मुस्लिमों तक इस्लाम का पैग़ाम अपनी कथनी व करनी यानि क़ौल व अमल से पहुंचाएं। ताकि इस्लाम कुबूल करके वो भी आख़िरत में कामयाब हो जाएं और जहन्नम हमेशगी के लिए उनका ठिकाना न बने।

बदक़िस्मती से मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम दोनों लम्बे अरसे से इस ग़लत फ़हमी के शिकार है कि इस्लाम सिर्फ़ मुसलमानों का दीन

(धर्म) है, कुरआन सिर्फ़ मुसलमानों की मज़हबी किताब है और मुहम्मद सल्ल. सिर्फ़ मुसलमानों के रसूल हैं। जबकि सच यह है कि जिस तरह अल्लाह सब को पैदा करने वाला और पालने वाला है, चांद, सूरज, हवा, पानी और कायनात की हर चीज़ सबके लिए है, उसी तरह कुरआन भी सब के लिए है। इस्लाम भी सब इन्सानों के लिए है और मुहम्मद सल्ल. सब इन्सानों के लिए रसूल (दूत) बनाकर भेजे गए हैं।

दअवते दीन

इस्लाम की तरफ़ लोगों को बुलाना हर मुसलमान पर उसकी इस्तेताअत के मुताबिक़ फ़र्ज़ है। जैसा कि इर्शादेबारी है ''आप (सल्ल.) कह दीजिए कि मेरी राह यही है। मैं और मेरे मानने वाले अल्लाह की तरफ़ बुलाते हैं पूरे यक़ीन के साथ।'' (युसूफ़ आयत 108) और यह कि ''तुम एक बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए निकाली (खड़ी की) गई है। इसलिए कि तुम भलाई का हुक्म देते हो। बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।'' (आले इमरान–110) आप सल्ल. ने भी फ़रमाया ''मेरा पैग़ाम पहुंचाओ एक आयत ही सही।'' (बुख़ारी–3461, दारमी–558, अहमद–6486, तिर्मिजी–2454) मालूम हुआ कि उम्मते मुस्लिमा का मक़सदे वुजूद लोगों को तौहीद की तरफ़ बुलाना और शिर्क से रोकना है क्योंकि सबसे बेहतर भलाई तौहीद है और सबसे बड़ी बुराई शिर्क है।

दअवत व तब्लीग़

अल्लाह के बन्दो को अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाना ''दअवते दीन' कहलाता है, तब्लीग़ के मआनी पहुंचाने के हैं और अपने दीनी भाईयों को इस्लाम की सही तालीमात से आगाह करना यानि मुस्लिम मआशरे में दर आए शिर्क व बिदआत से उन्हें बचाना इस्लाह कहलाता है।

दअवत के तीन अरकान हैं – 1. पैग़ाम, 2. दाऔ (दअवत देने वाला) और 3 मदऊ (जिसे दावत दी जाए)

1. पैग़ाम :– हमारा पैग़ाम ख़ालिस व मुकम्मल इस्लाम होना चाहिए। यह नहीं कि इस्लाम के किसी एक रुक्न जैसे नमाज़ या ज़कात या हज ही की तरफ़ लोगों को बुलाने को काफ़ी समझ लिया जाए। या किसी मसलक व मज़हब की तरफ़ लोगों को दअवत दी जाए। बल्कि क़ुरआन व सुन्नते रसूल सल्ल. का आसमानी पैग़ाम लोगों तक पहुंचाए। इसलिए कि इर्शादे बारी है ''ऐ ईमान वालों! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ।'' (बक़राह, आयत–208)

2. दाऔ :– पहले अपने नफ़्स को पाक करे। शिर्क व बिदअत और दूसरे सभी बड़े गुनाहों से दूर रहे। सीरते नबवी सल्ल. को अपना कर अल्लाह का प्यारा बन्दा बन जाएं। क़ुरआन की तिलावत करें। उसके

मआनी व मफ़हूम को समझे ताकि खुद उसकी अपनी तरबीयत भी हो और इल्म में इज़ाफा भी।

ज़िक्र व अज़कार भी पाबन्दी से करे ताकि अपने दाइमी दुश्मन शैतान के शर व फ़रेब से महफूज रहे। अस्तग़फ़ार भी कसरत से करें क्योंकि आप सल्ल. खुद रोज़ाना 70 या 100 दफ़ा अस्तग़फ़ार किया करते थे।

गाहे–बगाहे थोड़ा बहुत सदक़ा व ख़ैरात भी करता रहे। अपनी ताक़त के मुताबिक़ यतीमों, फकीरों, बेवाओं वगैरह की मदद भी करें। यह तमाम चीजें नफ़्स को पाक करती हैं।

3. मदऊ :– जिसे दअवत देना हो उसके माहौल, मिजाज़ और वक़्त का ध्यान रखें। बात नर्मी व हिक्मत से करें।

दाओ के लिए तज़किये नफ़्स क्यों ज़रुरी है?

1. इसलिए कि दाओ जब किसी ग़ैर मुस्लिम को दअवत देने का इरादा करता है तो फौरन शैतान उसकी राह में बहाने–बहाने से रोड़े अटकाना शुरु कर देता हे। जैसे आज बहुत गर्मी है या बहुत सर्दी है या तेज़ बारिश हो सकती है या आज यह एक काम और निबटा लें वगैरह।

2. दाओ की यह चाहत होती है कि उसकी बात मदऊ के दिल पर असर करे। यह असर तभी होगा जब दाई की ज़बान में तासीर होगी और यह तासीर अपने नफ़्स को पाक करने से हासिल होती है।

3. मुसलमान खुद मसलकों व फिर्कों और जमाअतों में बंटे हुए हैं और कोई न अपना मसलक़ छोड़ना चाहता है और न फिर्का या जमाअत बदलने या छोड़ने को राज़ी है। ऐसी हालत में किसी ग़ैर मुस्लिम से यह उम्मीद रखना कि इधर आप कुछ बाते उसे इस्लाम की बताएगें और वह फौरन इस्लाम कुबूल कर लेगा। नादानी के सिवा कुछ नहीं। इस काम में जगह–जगह परेशानियां, एतराजात जुल्म व ज़्यादती आपकी राह में रुकावटें खड़ी करेगी। उन पर सब्र करें, अल्लाह से इस काम में मदद चाहे और मदऊ की हिदायत के लिए दुआ भी करें। अल्लाह उनकी मदद ज़रुर करता है जो नफ़्स को पाक रखते हैं।

दअवते दीन का तरीक़ा

दअवते दीन एक ऐसा अमल है जिसे इल्म हासिल करने के शौक़, उस्ताद की रहनुमाई और तजरबे से ही हासिल किया जा सकता है। एक दाओ सारी ज़िन्दगी तालिबे इल्म ही रहता है इसलिए जब भी मौक़ा मिले इल्म हासिल करें क्योंकि इल्म मोमिन की गुमशुदा पूंजी है, जहां से भी मिले वह उसका ज़्यादा हक़दार है। (इब्ने माजा, तिर्मिज़ी)

उसूल

हर दाओी या उसकी जमाअत का यह दावा होता है कि उनका रास्ता कुरआन व सुन्नत का रास्ता है। लेकिन ज़रा ग़ौर करें तो पता चलता हैं कि उनके तरीक़े में कई चीजें कुरआन व सही हदीस के ख़िलाफ हैं। इसकी कुछ वुजुहात हैं–

अपना दअवती काम उन्होंने शुरु तो कुरआन व सुन्नत की रोशनी में किया। फिर किसी और का तरीक़ा भी उनकी अक़्ल व दिल को भाया और शैतान महाराज ने भी समझा दिया कि यह तरीक़ा भी अच्छा है। बस उस तरीक़े को अपना लिया और यह महसूस तक न हुआ कि हम क़ुरआन व सुन्नतें रसूल सल्ल. की डगर से हट चुके हैं।

कभी किसी सियासी जमाअत का तरीक़ा पसन्द आ गया तो उसे भी अच्छा समझ कर अपने दअवती तरीक़े में मिला लिया जाता है और यब बात शैतान भुला देता है कि कोई भी तरीक़ा और किसी का भी तरीक़ा अल्लाह या उसके रसूल सल्ल. के बतलाए तरीक़े से बेहतर नहीं हो सकता।

आज़ादी

इस्लाम में बहुत सी बातें तय शुदा हैं। उनमें दख़ल देने या अक़्ल दौड़ाने की इजाज़त किसी को नहीं है। जैसे नमाज़ पढ़ना। इसमें किसी को यह हक़ नहीं है नमाज़ शुरु करने के बाद तक्बीरे तहरीमा कहें या काबे के बजाए किसी और तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़े या रुकुअ से पहले सज्दा करे या दो सज्दों के बजाए एक या तीन सज्दे करे। मगर यह आज़ादी है कि लिबास जैसा चाहे पहने बशर्ते कि शरई हुदूद में हो। मदऊ की अक़्ल, समझ, इल्म और उम्र को ध्यान में रखकर उसी के मुताबिक उसे बात पहुंचाई जाए।

मराहिल

दअवती काम (अपनी) पब्लिसिटी करने या दिखावे व नामवरी के लिए न हो। मदऊ के मिजाज़ व तबियत को समझे और नर्म अन्दाज़ में अपनी बात रखें। ग़ैर मुस्लिम चाहे कितना ही पढ़ा लिखा क्यों न हो मगर इस्लामी तालीमात से अन्जान होने की वजह से वह अपने इत्मीनान के लिए कैसे भी सवाल कर सकता है। उन सवालों के माक़ूल जवाब देना और उसके शुब्हात को दूर कर उसे मुतमईन करना दाओी को आना चाहिए। अल्लाह के रसूल सल्ल. व सहाबा रजि. की ज़िन्दगियां अपने सामने रखें। ज़रा सी तक्लीफ पहुंचने या मुख़ालिफ़त होने पर हिम्मत हारने के बजाए अल्लाह से मदद मांगे और अपना काम बिना थके या घबराए जारी रखे। कुरआन व सुन्नत से दूर अपने मुस्लिम भाईयों की इस्लाह करने के लिए भी यही तरीक़ा अपनाए।

सबसे बड़ी सुन्नत

उम्मते मुस्लिमा आप सल्ल. की सुन्नत पर जान छिड़कती है। उससे बेइन्तेहा मुहब्बत करती है। उसकी ज़रा सी मुख़ालिफ़त बरदाश्त नहीं करती। लेकिन सवाल यह है कि यह मुहब्बत व अक़ीदत किन सुन्नतों को लेकर है ? अफ़सोस कि इनमें ज़्यादातर वो सुन्नतें हैं जिनकी हैसियत अफ़ज़ल व ग़ैर अफ़ज़ल की है। सही और बेहतर यह है कि सभी सुन्नतों पर अमल किया जाए लेकिन यह इन्साफ नहीं कि आप सल्ल. की उस सुन्नत को तो भुला दिया जाए जिसके लिए आप भेजे गए थे और जो आपकी ज़िन्दगी का ख़ास मक़सद था और उन सुन्नतों पर लड़ा जाए जिनकी हैसियत इस्तेहबाब की है। आप सल्ल. ने अपनी तैईस (23) साला ज़िन्दगी में जिस सुन्नत को सबसे ज़्यादा बरता वह तौहीद की दअवत थी। यह सुन्नत आज उम्मते मुस्लिमा की मोहताज है। तब्लीग़ तो की जा रही है मगर अक़ीदा–ए–तौहीद की नहीं बल्कि दीगर अरकान की। किसी ने सिर्फ नमाज़ की तरफ़ बुलाने ही को दीन समझ लिया है तो कोई जिहाद को ही इस्लाम समझे बैठा है। जबकि अक़ीदा ए तौहीद जो सबसे अहम है दअवत पहले उसकी दी जाना चाहिये मगर अक्सर ऐसा होता नहीं है बल्कि हर कोई बजाए इस्लाम के अपने मसलक व मज़हब या फ़िर्के की तरफ़ दअवत देता नज़र आता है और क़ुरआन व सुन्नत से सजा खालिस इस्लाम उसकी तरफ बुलाने वालों के लिए तरस रहा है।

जैसा कि क़ारी तैय्यब साहब के बेटे और दारूल उलूम देव बन्द के मुहतमिम क़ारी मुहम्मद सालिम ने फ़रमाया कि ''मुसलमानों के मुख़्तालिक़ मकातिबे फ़िक्र के अन्दर इख़्तेलाफ़ात की वजह यह है कि हमने दीन की तब्लीग़ के बजाए मज़हब व मसलक की तब्लीग़ शुरू कर दी है। यह इज्तेहादी राय क़ाबिले तरजीह तो हो सकती है क़ाबिले तब्लीग नहीं। हुज्जत सिर्फ़ अल्लाह का दीन हो सकता है। मज़हब व मसलक को कुबुल भी किया जा सकता है और रद्द भी। (तलाशे हक़–सफ़ा–445–446)

चूंकि आज उम्मते मुस्लिमा के कई लोग शिर्क व बिदअत में मुलव्वस हैं और वो जानते व मानते भी नहीं है। इसलिए ऐसे लोगों की हिक्मत के ज़रिये इस्लाह की जाए। क़ुरआन व अहादीसे सहीहा उन्हें बताई जाएं। उनकी हिदायत व इस्लाह के लिए अल्लाह से दुआ भी की जाए। ताकि ऐसे हज़रात भी आख़िरत में शर्मिन्दा होने से बचे और जन्नत उनका भी ठिकाना बन जाए।

दअवत की फ़ज़ीलत

1. दअवत देने वाले को अमल करने वाले के अज्र के बराबर अज्र

मिलता है। (अबु दाऊद 4596 इब्ने माजा–240)

2. दअवते दीन सदक़ाए ज़ारिया है। (मुस्लिम–)

3. अल्लाह की रज़ा के लिए अल्लाह के दीन की दअवत देना जिहाद है। (फ़ुर्कान, आयत–52) इमाम इब्ने क़य्यिम रह. ने कहा कि ''दीन का क़याम इल्म व जिहाद से होता है और जिहाद की दो क़िस्में हैं –

1. हाथ व हथियार के साथ जिहाद

2. दलील व बयान के साथ जिहाद

यह दूसरी क़िस्म का जिहाद ही इमामों का जिहाद है और जिहाद की यह क़िस्म अपने फ़ायदे, मेहनत और मुख़ालिफ़ीन की अक्सरियत की वजह से अफ़ज़ल है। (जादुल मआद)

उसूले तब्लीग़

1. तारीख–ज़माने के हालात को ध्यान में रखकर बात करें। जैसे कि अल्लाह ने शराब को एक दम से नहीं बल्कि तीन मराहिल में हराम किया। मतलब यह कि थोड़ा–थोड़ा समझाएं उतना कि जितना मदऊ का दिल व ज़हन कुबूल कर ले।

2. अच्छे अख़लाक़ – मदऊ के जज़बात का ख़्याल रखे। जहां बुरे अन्जाम से डराये वहीं उसे जन्नत की खुशखबरी भी सुनाए।

3. अच्छे अन्दाज़ में बहस – अगर किसी मौजूअ पर बहस की जरुरत पड़ जाए तो नर्म लहजे में बात करें। मुख़ातिब को हराना मक़सूद न हो बल्कि उसकी इस्लाह का इरादा करें।

4. ज़बरदस्ती न करे – किसी पर सख़्ती या ज़बरदस्ती न करे। इसलिए कि दीन में ज़बरदस्ती नहीं है। अलबत्ता मदऊ के बेहतर अन्जाम के लिए कोशिश व मेहनत जारी रखे।

5. अक़्ली इस्दतलाल – अगर दौराने दअवत व तब्लीग़ करते हुए अक़्ली दलाइल देने की ज़रुरत पेश आए तो वह भी दे। ताकि अक़्लमंद की समझ में बात जल्दी आ जाए।

6. आसान अन्दाज़ – आम फ़हम अन्दाज में दीन (इस्लाम) को समझाइए ताकि मदऊ को बात समझने में आसानी हो और वह उलझन का शिकार न हो।

7. दुआ – मदऊ की हिदायत के लिए अल्लाह से दुआ करें।

अल्लाह से दुआ है कि अगर वह हमसे अपने दीन की ख़िदमत ले तो उसमें हमारे लिए आसानी पैदा करे और इस काम में हमारी मदद भी फरमाए। हमारी ख़ताओं से दर गुज़र करे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन।

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649